316 (P)
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1387/1071

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 316

S/1811
891.431
C348B

186

बिजली

IMPERIAL RECORD
RECEIVED
8 AUG 1931
DEPARTMENT

"मिट्टी से वीर पैदा तू कर दे मेरी बिजली ।
नस नसमें असर बिजलीका भरदे मेरी बिजली ॥"

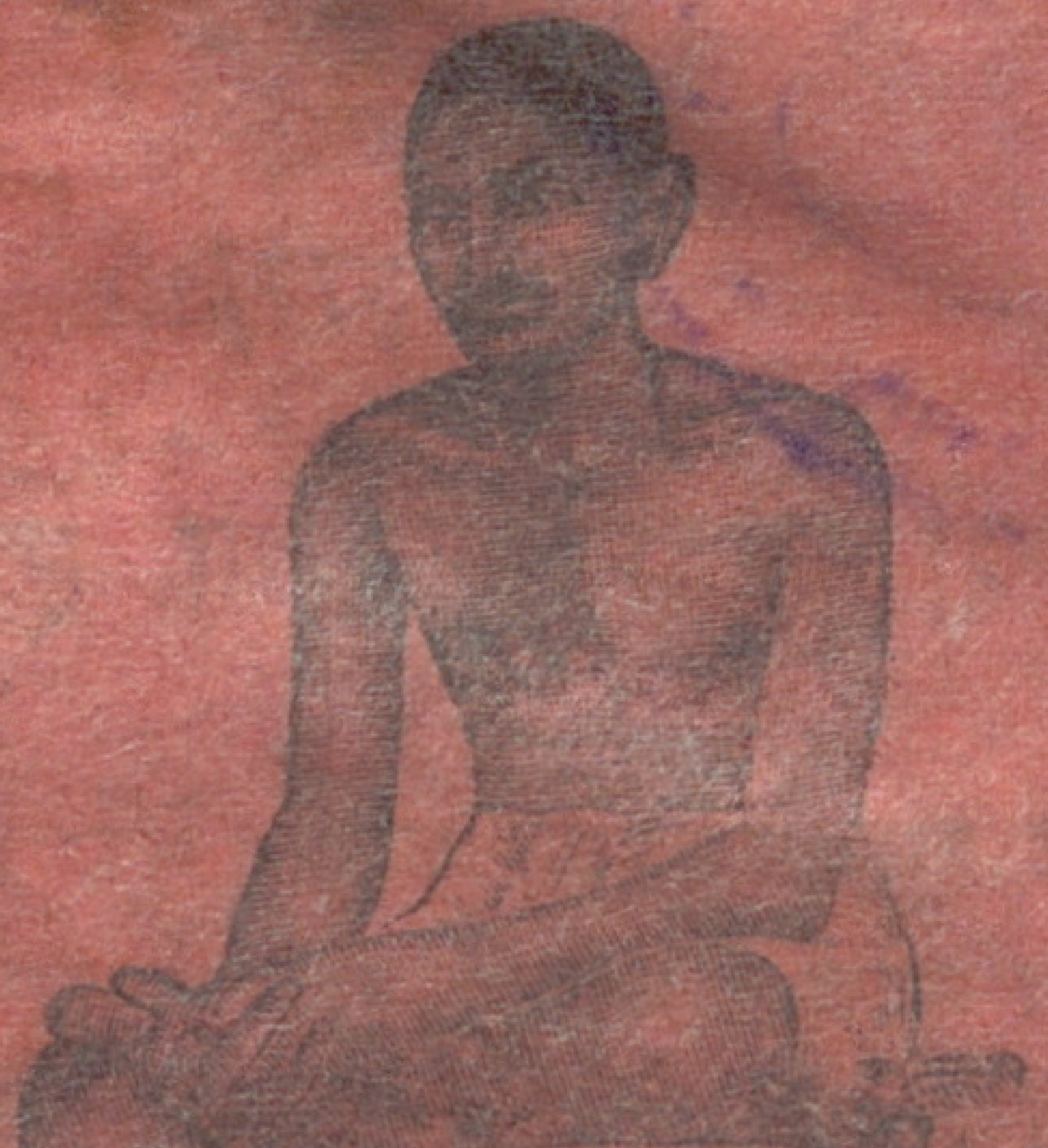

मूल्य -)॥ १९३० ई०

ले०:—चकोर ।

प्र०:—रामदास जायसवाल (बृजमनगंज)

भगवती प्रसाद गुप्त द्वारा,
कुमार प्रेस, गोरखपुर में मुद्रित ।

❀ ओ३म् ❀

लीजिये ! लीजिये !! लीजिये !!!

Regd. Trade Mark.

No. 577/29

NATIONAL ... 316 7.12.71

श्री हिमकल्याण तैल ।

जग सकल शुभ कल्याण कारी, मेरा हिमकल्याण है ।
शीतल सुगन्धित सुखद है, गुण रामबाण समान है ।
वह खिलखिला उठता हृदय जो कष्ट से अति म्लान है ।
प्रिय इस लिये यह पा रहा शोभा सहित सम्मान है ॥
मस्तिष्क निर्बलता दरद शिर शीघ्र करता दूर है ।
इससे सभी आयल बज़ारु मात है मात है मदचूर है ॥

मूल्य छोटी शीशी ।) बड़ी शीशी ॥) डा० व्यय ।≤)
चार शीशी लेने पर १ मुफ्त एजेन्टों को भर पूर कमीशन दिया जायगा है ।

पता-श्रीराम गुप्ता-

पो० बृजमनगंज [गोरखपुर]

हे राम (१)

हे राम वह कहाँ है अब राम राज तेरा।
इन्साफ़ का कहाँ वह, रस्मो रिवाज तेरा॥
हुन था कभी बरसता इस मादरे वतन में।
फैला था जब यहाँ पर दस्ते निवाज़ तेरा॥
तम दर्द ग़म मुसीबत, की थी यहाँ न छाया।
मिस्ले हज़ारों सूरज चमका ज़ब ताज तेरा॥
उल्फत वो मेल मिल्लत की रूह थी रिआया।
किया सबको नेक सीरत शीरी मिजाज तेरा॥
जुर्मो सितम जफ़ा का तूने वो दाग़ धोया।
ज़बरन किया था किसने? बरदारी नाज़ तेरा।
"प्रजातंत्र राज" देखा जो आजकल जहाँ में॥
काग़ज़ के फूल से हैं नहीं गंधोसाज तेरा।
अज़मत हरिक दिलों पर अबभी है नक़श तेरा।
है नाम हर ज़ुबाँ पर भारत में आज तेरा॥
जब तक ज़मीं फ़लक हैं, सूरज वो चाँद तारे।
गाता रहेगा यशगुन हिन्दू समाज तेरा॥
अरजी (चकोर) आख़िर हम बेकसों की स्वामी।
आकर लगा किनारे डूबा जहाज़ तेरा॥

झंडा प्रार्थना (२)

बन्दनीय हे राष्ट्रीय झंडे, अभय तुझे फहरायेंगे ।
नमस्कार शत कोटिबार नित, जय जय कार मनाएँगे ॥
आन बान तू शान हमारा, गौरव गुरुता मान हमारा ।
ईसा, ईश, मुहम्मद सम हम, तुझे ध्यान धर ध्यायेंगे ॥
दीनधर्म ईमान हमारा, विजय, बिभव, उत्थान हमारा ।
मन्दिर, मस्जिद गिरजा सेभी, पावन तुझे बनायेंगे ॥
यौवन, जीवन, प्रान हमारा, कर्म, ज्ञान कल्यान हमारा ।
तुझे समर्पित सरवस करके, देश की लाज बचाएँगे ॥
शांति, प्रेम, सत रचित तिरंगा, तुझमें सरस्वति यमुना गंगा ।
आई पाप दासता हरने, मुक्ति लाभ हम पाएँगे ॥
चक्र सुदर्शन चित्र सँवारा, तेरे बक्षस्थल पर प्यारा ।
दुर्दिन, दारिद, विपद, आपदा, इससे मार भगाएँगे ॥
हिन्दू, मुस्लिम, यवन ईसाई, हम सब प्यारे हिन्दी भाई ।
तेरे तले गले मिल करके, दासता पाश कटायेंगे ॥
त्रिभुवन विदित तेरी होसाका, नमें तुझे सब विश्व पताका ।
गुरु भारत के झंडे फिर तुझे, विजयी विश्व बनायेंगे ॥
सूरज चाँद भले टल जाएँ, गगन धरा पाताल समायें ।
भारतीय स्वातंत्र युद्ध से, पग ना कभी हटायेंगे ॥
चाहे आग कोई बरसाये, पैशाचिक निज कृत्य दिखाये ।
प्राण (चकोर) जाय तो जाए, तुझे न किन्तु झुकाएँगे ॥

खादी (३)

इशमते मुल्क है कौमी वक़ार खादी है।
दुर असल माल वो दौलत की सार खादी है॥
राम घनश्याम के तनपर इसी ने शोभा दिया।
भीम अर्जुन की पुराना सिंगार खादी है॥
बुद्ध शंकर ने लँगोटी इसी का पहिना था।
"शिवा प्रताप" के सरकी दस्तार खादी है॥
हमारे मल मलो मसलिन को देख कर दुनिया,
कह चुकी देवता का चमत्कार खादी है॥
अजब कमाल की बारीक थी वह कारीगरी,
बिक गई तौल कर सोने के तार खादी है॥
थान खादी का किया पार अँगूठी का सुराख,
ढक लिया तोला भर हाथी अम्बार खादी है॥
राज जब इसका था भारत में तब स्वराज रहा,
गई दे सर पै ग़ुलामी का भार खादी है॥
न कर अफ़सोस ए वीरानः चमन के बुलबुल,
सुनाने आई पयामें बहार खादी है॥
बहन आजादी की उजड़े घरों की आबादी,
तुझपै गाँधी किया सरवस निसार खादी है॥

यार दिलदार ग़रीबों की अमीरी न्यामत,
कार बेकार दुखी की करार खादी है ॥
अब तेरी सादगी का देश है आशिक़ सादिक़,
मजनू लाखों तेरे दर के भिखार खादी हैं ॥
लंकाशायर के लिए बन रही अब अंगारा,
मानचेस्टर के तू आंखों की खार खादी है ॥
तेरी मुलायमी पाकीज़गी की क्या ? तारीफ़,
फ़ेन सागर से भली तू हज़ार खादी है ॥
लगन है तू हो बसन मरने पै तेरा हो कफ़न,
चकोर मुक्ति दे गंगा की धार खादी है ॥

अहिंसा-युद्ध (४)

भारत में छिड़ा आज अहिंसा का जंग है ।
हैरत में जहाँ सारा है सुरलोक दंग है ॥
ऐसी लड़ाई ख़्वाब है तारीख़े जहाँ में ।
बे अस्त्र इधर हैं उधर तोपो तुफ़ंग है ॥
गाँधी की फ़िलासफ़ी में क्या ? जादू भरा है ।
साइंस दाँ दिमाग़ हवा के पतंग है ॥
मुरदों में जिन्दगी है जवानों में नई आन ।
प्रह्लाद हरीचंद का घर घर में रंग है ॥

चंडी की तरह देवियाँ मैदाँ में अड़ रहीं।
परदा अब उनके वास्ते कायर जोपंग है॥
यह सिविल नाफ़रमानी क्या ? तूफ़ाने इन्क़लाब।
जड़ से हिलाया नस्ले सल्तनत का अंग है॥
हुब्बे वतन का शोर, उधर है दमन का जोर।
ज्वालामुखी से तेल करासन का संग है॥
अब जेल हिन्द बन रहे हैं मक्का वो काशी।
गोली भी सहम जाती देख छाती संग है।
बीमार तन्दुरुस्तहो क्या ? इनका बुरा है॥
बरसों से हम तो मर्ज़ गुलामी में तंग हैं।
हम काले साफ़ दिल हैं खुदा की क़सम चकोर॥
गोरे वे मगर उनका सभी काला ढंग है॥

याद (५)

संसार का गुरू था, भारत वतन हमारा।
था स्वर्ग का बगीचा, प्यारा चमन हमारा॥
थी सभ्यता हरित हो, फूली फली यहीं पर।
जग जब न जानता था क्या ? धर्म गुन हमारा॥
नंगे बदन थीं फिरतीं जब जातियाँ जगत की।
तब की मनुष्यता ने चुम्बन-चरन हमारा॥

जब था अविद्या पशुता का क्रूर जगमें शासन।
जारी था वेद पाठन दर्शन मनन हमारा॥
भगवान पर भी हमने जादू किया था ऐसा।
बन राम कृष्ण आए संकट हरन हमारा॥
अध्यात्म योग बल का क्या ? तेज वह प्रबल था।
इक मंत्र से समुन्दर बना आचमन हमारा॥
धन पर स्वदेश के थे लाखों कुबेर लज्जित।
है मूल्य कई जगत का लूटा रतन हमारा॥
क्या ! वीरता की गाथा अपनी पुरानी गाएँ।
पढ़ देखो महाभारत श्रीरामायन हमारा॥
सत ज्ञान मान गौरव का था निधान भारत।
थे देवता तरसते, पाएँ चरन हमारा॥
स्मृति का गान गाते, रोकर चकोर अबतक।
हिमगिरए हिन्द सागर, गंगो जमन हमारा॥

क़ौम के मरदो (६)

क़ौम के मरदो! तुम्हें अब शरम आनी चाहिए।
मुल्की ख़िदमत में न करना आना कानी चाहिए॥
वतन वह बरबाद हो जिसके पिसर तैंतिस करोड़।
डूब मरने को तुम्हें अब थोड़ा पानी चाहिए॥

देवियाँ बन " दुर्गा काली " आरहीं मैदान में ।
तुम न आते क्या ? तुम्हें चूड़ी पिन्हानी चाहिए ॥
मुल्क के ख़ादिम पड़े जेलों में सदमें सह रहे ।
क्या ? तुम्हें आराम की रोटी उड़ानी चाहिए ॥
आज भी कपड़े विदेशी बदन पर झलका रहे ।
मुँहमें अपने हाथों से स्याही लगानी चाहिए ॥
क़ौम का मज़नू दिलो का शहन्शा शाने खुदा ।
वीर गांधी जेल में कुछ कर दिखानी चाहिए ॥
निकलते अरविन की तरकस से अजूबा बान हैं ।
सामने आकर तुम्हें छाती अड़ानी चाहिए ॥
नौ जवानो तुमको लानत ऐश के पुतले बने ।
गर न हो मरदानगी घूँघट बढ़ानी चाहिए ॥
हर्फ़ सोने से लिखाओ हिन्द का इतिहास तुम ।
ऐ (चकोर) अब देश हित गरदन कटानी चाहिए ॥

नमक मुल्क को अदा करदे (७)

नौजवाँ तू है वतन को भी नौजवाँ करदे ।
ज़िंदगी तुझमें है सरसब्ज़ गुलिस्ताँ कर दे ॥
दिखादे जौहरे अजमत अजीब आलम को ।

बिना हथियार के तोपों को नातवाँ करदे ॥
पयामे जंगे अहिंसा का सुनादे घर घर, ।
जोशे मरदानगी रग रग में ख़ूं रवां करदे ॥
ख़ाक से हिन्द के पैदा हों बहादुर वो दिलेर ।
ताकते रूह फिर प्रहलाद की अयाँ करदे ॥
ख़ुद फ़ना होके फ़ना करदे सितम जोरो जफ़ा ।
सरकटा करके सर आज़ादी का मैदाँ करदे ॥
मारदे ख़ौफ़ो ख़तर मार न किसी को कभी ।
इश्क़ आज़ादी में तन जान को क़ुरबाँ करदे ॥
नमक हराम है जो मुल्क के हमराह न हो ।
नमक बनाके नमक मुल्क का अदा करदे ॥
(चकोर) हज़रते गाँधी के क़ौल पर डट कर ।
हिन्द आज़ाद कर दुनिया को शादमाँ करदे ॥

शहीदे वतन (८)

मुझे न रोको वतन पर निसार होने दो ।
बलाएँ रंजो ग़म सर पर हज़ार होने दो ॥
शिवा प्रताप का जोशे जुनूं है ख़ूं में मेरे,
हिन्द माता का मुझे ग़मगुसार होने दो ॥
उठा लो दामे हविस को मेरे राहे हक़ से,

शेर के बच्चे को हरगिज़ न स्यार होने दो ॥
कलामे कृष्ण ज़माने में तरो ताज़ा अभी,
रूहला मौत–मौत का शिकार होने दो ॥
मुझे न चाहिए महलों के विहस्ती कमरें,
जेलख़ाना मेरे ज़िन्नत का द्वार होने दो ॥
मख़मली गद्दों की राहत का तलबगार न मैं,
मेरे आराम का बिस्तरए दार होने दो
मग़रबी लू ने चमन को मेरे वीरान किया।
ख़ून से सीचेंगे फस्ले बहार होने दो ॥
हम कभी सत्य अहिंसा से नहीं फिर सकते।
सामने सीने पै गोली की वार होने दो ॥
तन स्वदेशी मेरा यह मन भी स्वदेशी मेरा।
मेरे लाशे का स्वदेशी सिंगार होने दो ॥
(चकोर) मरने पै मेरे मज़ार पर लिखना।
मुझे शहीदे वतन बारबार होने दो ॥

जवाहिर (९)

दुखी हिन्द का मालोज़र है जवाहिर।
जवानों का जानो जिगर है जवाहिर ॥
अहिंसक करमबीर सत का व्रती है।

वह आज़ादी का फिल सफ़र है जवाहिर ॥
हिमालय सा पक्का है गंगा सा पावन।
दया प्रेम का इक बहर है जवाहिर ॥
है मंसूर ईसा की उसमें सदाक़त।
वह मग़रिब का बाँका लुथर है जवाहिर ॥
हज़ारों शहीदों के दिल को जमाकर।
खुदा ने रचा शेर नर है जवाहिर ॥
अगिन हो बरसती मचा या प्रलय हो।
सदा रहता सीना सिपर है जवाहिर ॥
जहल में उसे रख जहल में; वे बेखुद।
नहीं सूझना बाहर घर है जवाहिर ॥
न कर सकते उसको अलग हमसे हज़रत।
हरिक दिल का घर प्यारा घर है जवाहिर ॥
(चकोर) हिन्द के लाखों लख्ते जिगर हैं।
अजब क्रांतिकारी पिसर है जवाहिर ॥

जवाहिर (१०)

जगमग जग जौहर जाहिर है, उगता नयाभान जवाहिर है।
वह वीर लड़का बाँका है, भारत का प्रान जवाहिर है ॥
थी दासताकी अँधियारी निशा, गफ़लत की नींदमें हम थे पड़े।

फैला प्रकाश दिखलाया सत, हमें पथ उत्थान जवाहिर है ॥
थे चमगादर उलूक आदिक हँस चहकते करते चहल पहल ।
देखा प्रकाश मुख छिपा रहे, ऐसा तेज निधान जवाहिर है ॥
कई कोटि जवाहिर खानिज हों, दुनियाका विभवश्री साथरहे।
नहिं उसकी तुलना कर सकते, ऐसा श्रीमान जवाहिर है ॥
आनंद भवन का पला हुआ, विपदा के आँगन खेल रहा ।
हँस हँस काँटों पर चलता है, बना वज्र समान जवाहिर है ।
नवयुवक समाज का राजा है, भारत का प्यारा राष्ट्रपती ।
अरमान दीन दुखियों का है, गाँधी का मान जवाहिर है ।
त्यागी हरिचंद से त्याग लिया, भीषम वो भीम की बहादुरी ।
दिल लाखों शहीदोंका लेकर, रचा विधि बलवान जवाहिर है ।
हमदम है सच्चा भारत का, हर दम दम भरता भारत का ॥
अवतार भारती स्वाभिमान का हुआ वर्त्तमान जवाहिर है ।
उसकी है जवानी लासानी, मुरदों में जीवन डाल रही ।
पानी स्वदेश का रखलेगा सच्चा बलिदान जवाहिर है ॥
जय जयति जवाहिर की होवे युग २ वह जीवे लाख बरस ।
तेरी सृष्टी का है भगवन, पावन हितमान जवाहिर है ।
हर चंद्र अलग हम से (चकोर) किए उसे नहीं करने वाले ।
हर एक हृदय के मन्दिर में करता मुसकान जवाहिर है ॥

मर्द (११)

मर्द वह मर्द है जो क़ौमी दर्द मंद हुआ।
मर्द, नामर्द है जो माहिलो जथबंद हुआ॥
ज़िंदगी उसकी जवानी को है लानत सौबार।
गले में देश के फाँसी का जो है फंद हुआ॥
जिया जो अपने लिए मुल्क की परवा न किया।
बुत हिमाक़त का है गरकाब अक़्लमंद हुआ॥
दिलो जिगर है तेरे में अगर पत्थर का नहीं।
जंगे आज़ादी में आजा तू कमर बंद हुआ॥
राहु ने चमकते सूरज को गोया घेर लिया।
यरोड़ा जेल में गाँधी है नज़र बंद हुआ॥
हुक्मराँ कहते हैं डंडो से हुकूमत होगी।
कहदे मर मिटने को तैयार सारा हिन्द हुआ।
अड़ जा प्रहलाद सा और रख क़दम अँगदकी तरह।
दिखादे त्याग से घर घर में हरीचंद हुआ।
सख्तियाँ दर्दो अलम स्वर्ग का आनंद समझ।
चना तू जानले अब जेल का गुलकंद हुआ॥
मंद पड़ जायेगी कहते वे ज़ोरे आज़ादी।
दिखादे हौसला भारत का चार चँद हुआ॥
सींच कर खूने जिगर से (चकोर) अपना चमन।
गुलखिला सच्चा अगर हिन्द का फर जंद हुआ॥

ज़िन्दगी (१२)

वही ज़िंदगी दर असल ज़िंदगी है।
जो मुर्दों को देती नवल ज़िंदगी है॥
पड़े नींद ग़फ़लत में क्यों सो रहे हो।
ये दो दिन में जाती निकल ज़िंदगी है॥
जवानी यह मिल ज़िंदगी से है कहती।
मुझे गर सँभाले सफल ज़िंदगी है॥
पलट देगा काया वह क़ौमो वतन का।
समझता जो मेरी अज़ल ज़िंदगी है॥
वह आरामे-जन्नत है पाता जहाँ में।
बनाता जो अपनी सरल ज़िंदगी है॥
न खोजो ख़ुदा को तुम दैरो हरम में।
ग़रीबों की उसका महल ज़िंदगी है॥
जफ़ा पेशा ज़ालिम ख़ुदाई का दुश्मन।
बनाता जो चाकू का फल ज़िंदगी है॥
कमी हैवाँसे उसको कम न समझना।
शिकम भरना जिसका शग़ल ज़िंदगी है॥
न रह दूर नेकीसे मग़रूर हो कर।
यह सपने की बस इक मसल ज़िंदगी है॥

(चकोर) और देखा न कुछ इस जहाँ में।
यह नेकी बदी दोही फल ज़िंदगी है॥

चापलूस हूं (१३)

भारत की गवर्नमेंट का मैं चापलूस हूं।
दरियाव गुलामी का जबरदस्त सूस हूं॥
गोरों को राम कृष्ण से बेहतर हूं समझता।
सच कहता उनके जूतों का इक अच्छा ब्रूस हूं॥
अन्धेरे देश जो विलायत से हैं आते।
उनके लिए मैं रहनुमाँ भारी फनूस हूं॥
जय चंद और माहिल का मुझमें कमाल है।
मैं देश भक्तों के लिए ईसा का क्रूस हूं॥
कुत्ते को जितनी नफ़रत है हड्डी से जहाँ में।
उससे ज़राभी कम नहीं मैं तलबे घूँस हूं॥
मैं धर्म वो ईमान से रहता हूं कोसों दूर।
गोरों की "काली जोंक" बना खून चूस हूं॥
हाकिम ने गुर्ज कर कहा बिल्ली सा " डैम फूल "।
मैं हाथ जोड़ कह दिया सरकारी मूस हूं॥
इन कागज़ी खिताबों से उड़ता हूं फ़लक पर।
अधिकार कहीं मिल गया तो ज़ारे रूस हूं॥

है जन्नते आराम गुलामी में मज़ा वाह !
आज़ादी में बरबादी मैं करता महसूस हूं ॥
चुपरह (चकोर) तुझको क़फ़स बन्द करूँगा ।
सी० आई० डी० का हाथ हूं हाकिम जसूस हूं ॥

विद्यार्थियों (१४)

विद्यार्थियों तुम्हीं हो, बस क़ौमी ज़िंदगानी ।
तुम परही मुनहसर है क़ौमो वतन का पानी ॥
वह कौन काम ऐसा, जो तुम न कर सकोगे ।
दुनिया को हिला सक्ते पाकर के नव जवानी ॥
श्री रामकृष्ण अर्जुन तुम बन सकोगे लेकिन ।
गंगा की धारा होवे गर जोश की रवानी ॥
पहला है फ़र्ज अपना नूरे नज़र वतन के ।
ब्रह्मचर्य को बचाओ बन करके कर्म ज्ञानी ॥
गर चाहते हो दुनिया होवे बिहिश्त तुमको ।
बनो सादगी के सादिक़ कर सादी जिंदगानी ॥
इंगलिश ज़रूरी पढ़ना, उसका न बनके रहना ।
नहीं जान की तुम्हारे दुश्मन बनेगी जानी ॥
हरचंद यह न समझो तालीम नौकरी है ।

अपने पै एक रखना बस अपनी हुकमरानी ॥
तालीम मग़रबी के मालूम सब करिश्मे।
हिन्दी वो हिन्द हिन्दू पै करना मिहरबानी ॥
बिस्कुट से नेक घर की, ए सूखी रोटियाँ हैं।
नक्क़ाल से तो बेहतर एक सच्चा देहक़ानी ॥
मैकाले के कथन पर तुम ठोकरें लगाओ।
देखो (चकोर) अबना यह रंग आस्मानी ॥

गाना (१५)

भारत वीरों! गुलामी मिटाने चलो।
प्यारा भारत आज़ाद बनाने चलो ॥
क्या? से क्या? प्यारा वतन यह हाय! अपना रहगया।
जो भला जग का किए, गला उसका नपना रहगया ॥
देवता को नाम अब शैताँ का जपना रहगया।
हशमतो दौलत हुनर सब मिस्ले सपना रहगया ॥
लगी घर में है आग बुझाने चलो। भारत वीरो०।
था जिन्हें घर में बिठाया हमने मिहमाँ जानकर ॥
सामने अब वे खड़े तेग़े दुधारा तान कर।
वक्त पा हमने कहा मिहमानी रहने दीजिए।
सभ्यता की पालिसी लासानी रहने दीजिए ॥

लगे कहने चलो जेल खाने चलो । भारत वीरो० ।
डेढ़ सौ बरसों से वे आज़ाद आक़ा हो रहे ॥
हम हुए बरबाद हा ? घर घर में फ़ाक़ा हो रहे ।
जब कि शोरो गुल मचाना हमने ज्यादा कर दिया ॥
वे गला घोंटे मगर वादे पै वादा कर दिया ।
अभी लायक नहीं इस बहाने चलो । भारत वीरो० ॥
हर तरह अपनी उमीदों पर जब पानी फिर गया ।
उनके अहदो पै माँ की नज़रों से पानी गिर गया ॥
तब रिआया हिन्द की तर्के मवालाती हुई ।
सितम वे करते गए पत्थर इधर छाती हुई ॥
कहा गाँधी ने भारत जगाने चलो । भारत वीरो० ।
जंगे जरमन में किया जो मुल्क ने कुर्बानियाँ ॥
बाग़े जलियाँ में दिया बदला अजब बिरटानियाँ ।
बेकसों पर गोलियों की बाढ़ बरसाई गई ॥
हिन्दमाता ख़ून से बच्चों के नहलाई गई ।
कैसे वे दिन ऐ वीरो भुलाने चलो । भारत वीरो० ॥
है ज़माना याद सन् उन्नीस सौ इक्कीस का ।
ग़म नहीं था इश्क़े आज़ादी में तन मन शीस का ॥
अब न वह जोशो मुहब्बत लगन आज़ादी रही ।

हुक्म गाँधी का तुम्हीं से सिर्फ बरबादी रही ॥
घरमें बैठ न मुँह को छिपाने चलो । भारत वीरो० ।
फिर महात्मा गाँधी ने छेड़ा अहिंसा जंग है ॥
एक मुट्ठी हाड़ पर उफ़ सारी दुनिया दंग है ।
नमक कर ज़ोरों जफ़ा है ईश्वरी क़ानून पर ॥
इस लिए यह है चढ़ाई नमक के क़ानून पर ।
नमक घर घर में बेशक बनाने चलो । भारत वीरो० ।
मित्रों आज़ादी नहीं कोई हँसी या खेल है ।
इसको पाजाने का रस्ता क़त्ल फाँसी जेल है ॥
काग़ज़ी नावों से हम उस पार जासक्ते नहीं ।
लेकचरों लफ्फ़ाज़ी से उद्धार पासक्ते नहीं ॥
आगे बढ़ करके सरको कटाने चलो । भारत वीरो० ।
शेर के बच्चे हो तुम आओ निकल मैदान में ॥
दाग़ लगने दो नहीं हरगिज़ बुज़र्गी शान में ।
यह अहिंसा की लड़ाई दुनिया में लासानी है ॥
खून पानी करके रखना मुल्की क़ौमी पानी है ।
(चकोर) सतकी प्रतिज्ञा निभाने चलो ॥
भारत वीरो ! गुलामी मिटाने चलो ।

विदेशी कपड़े के व्यापारी (१६)

छोड़ दो पाप जनक व्यापार, विदेशी कपड़ों के व्यापारी ।
अभी तक हुआ चेत नहिं शोक, बने गोरों की काली जोंक ।
ज़रा देखो तो माथा ठोंक, बनाए तुम भारत यम लोक ॥
रहा जो नंदन बन फुलवारी ॥ छोड़ दो० ॥
लुटाए लूटे ग़जब की लूट, रही न घर में कौड़ी फूट ।
माना कुछ भरी तुम्हारी मूंठ, बाग में लेकिन बाकी ठूंठ ॥
पेट हित बने पाप अधिकारी ॥ छोड़ दो० ॥
जिसे तुम समझ रहे व्यापार, देश के गले का वह तलवार ।
किया लाचार हिन्द बेज़ार, हर तरह सुस्त और बेकार ॥
करोड़ों दरशें दुखी भिकारी ॥ छोड़ दो० ॥
बिदेशी बनियों के हो दलाल, कमीशन खाकर अधिक निहाल ।
नहीं कुछ देश जाति का ख्याल, सुखी हो या करें बधिक हलाल
बजाजी चलती रहे तुम्हारी, ॥ छोड़ दो० ॥
फाड़ ग़ज़ एक फाड़ते चार, समझ लो भरी बात में सार ।
बुद्धि है, बुद्धू किन्तु अपार, काटते क्यों बैठने की डार ॥
भेजकर बाहर सम्पति सारी ॥ छोड़ दो० ॥
पाँच की रुई दाम पचीस, वस्त्र का बढ़ा पाँच गुना फीस ।
किया हड्डी चर्बी से सोप, धर्म धन करता आकर लोप ॥

बज़ाजो ! तुमपर जिम्मेदारी ॥ छोड़ दो० ॥

कभी थे ऐसे यहाँ बजाज, स्वदेशी से भरे सदा जहाज ।
गैर देशों का किए बज़ार, सितारा चमकाए ब्यापार ॥
रहे वे देश जाति हितकारी ॥ छोड़ दो० ॥

वही ब्यापार सही ब्यापार, शक्ति निज कारीगरी अधार ।
गैर के बल आशा का काम, रात को उगने वाला घाम ॥
देख ली मित्रो आँख उघारी ॥ छोड़ दो० ॥

कराओ चरखे का परचार, स्वदेशी का होवे उद्धार ।
बने घर घर खादी भंडार, यही अब सच्चा है ब्यापार ॥
देश की इज़्ज़त लेहु सँभारी ॥ छोड़ दो० ॥

यही है सादर विनय (चकोर)
बँधो अब प्रेम एकता डोर ।
करो " बिजनस " अपना सर मौर ॥
छोड़ दो अब आशा पर कौर ।
बनो सच्चे स्वराज अधिकारी ॥ छोड़ दो० ॥

सत्याग्रह संग्राम [१७]

छिड़ा है सत्याग्रह संग्राम । जवानो ! करो देश का काम ॥
तुम्हीं हो देश जाति अभिमान । तुम्हीं हो पतन और उत्थान ॥

तुम्हीं हो दुखियों के अरमान । निकल कर आ देखो मैदान ॥
न रक्खो अपना देश गुलाम । छिड़ा है सत्याग्रह संग्राम ॥
जवानी ! जाए नही बेकार । करे नव जीवन रस संचार ॥
हरित वन नंदन हो गुलज़ार । चकित कर दो सारा संसार ॥
कलंकित करो न अपना नाम । जवानो ! करो देश का काम ॥
देख लो अपना प्यारा देश । दुर्दशा दुर्दिन है दुख क्लेश ॥
दुशासन खीच रहा है चीर । द्रौपदी विकलित अधिक अधीर ॥
बचाओ बनकर के घनश्याम । जवानो ! करो देश का काम ॥
अमर दुनिया में रहता कौन मृत्यु कर देती सबको मौन ॥
कब्र या चिता आखिरी भौन । आजादी हित हो जाओ हौन ॥
छोड़ कर जग माया धन धाम । छिड़ा है सत्याग्रह संग्राम ॥
समझलो जीना क्या मरना । मुसीबत में धीरज धरना ॥
मारना यहाँ नहीं मरना । रक्त दे प्राण दान करना ॥
शब्द कटु मुख से करो हराम । जवानो ! करो देश का काम ॥
धार तरवार पै चलना है । बज्र भीगिरे न टलना है ॥
जेल को खेल समझना है । दार पर हँस हँस चढ़ना है ॥
मिले तब स्वतंत्रता सुखधाम । जवानो ! करो देश का काम ॥
सामने हैं माहिल जयचंद । करेंगे फंद लिए छल छंद ॥
न पीना उनका मीठा जाम । हृदयसे करना उन्हें प्रणाम ॥
अहिंसक सात्विक रह अविराम । जवानो ! करो देश का काम ॥
तुम्हारे पूर्वज स्वर्ग से आज । देखते अद्भुत युद्ध स्वराज ॥
बीर बर रखना भारत लाज । मृत्यु या लेना सुखद स्वराज ॥
(चकोर) अच्छा भविष्य परिणाम ॥

[किसान]

दुखिया किसान हम हैं, भारत के रहने वाले।
बेदम हुए न दम है, बे मौत मरने वाले॥
इंसान बन के आए, गो पाक इसी ज़मी पर।
हमसे मगर हैं अच्छे, ए घास चरने वाले॥
चक्की मुसीबतों की, दिन रात चल रही है।
करके पिसान छोड़े, हमको हैं पिसने वाले॥
दुनिया है एक तन तो, हम आत्मा हैं उसकी।
लेकिन कुचल रहे हैं, हमको कुचलने वाले॥
अफ़सोस हाय! हैरत, किस पाप का नतीजा।
सब से हमीं हैं निर्धन, धन के उगलने वाले॥
सर पर हैं कर बहुत से, कर में न एक धेला।
घर पर नहीं है छप्पर, बस्तर उघरने वाले॥
जुर्मों सितम के मारे, दम नाक में हमारा।
भगवान तक हुए हैं, पर के कतरने वाले॥
बरसे अया न बरसे, बादल अब आस्माँ से।
यह नेत्र ही हमारे, पानी बरसने वाले॥
फुरसत नहीं हैं मिलती, इक साल काल से है।
दाने बिना तरसते, न्यामत परसने वाले॥
ऐ मौज करने वालो, कर देंगे हश्र बरपा।
उभरे (चकोर) जग की, हम आह भरने वाले॥

[स्वदेशी]

स्वदेशी तन है स्वदेशी मन है, स्वदेशी के अब सब ठाठ होंगे ।
स्वदेशी धन धन स्वदेशी जीवन, स्वदेशी के छन छन पाठ होंगे ॥
स्वदेशी दौलत स्वदेशी इज़्ज़त, स्वदेशी हशमत स्वदेशी उल्फ़त ।
मगन स्वदेशी लगनमें रहकर, न बारह भारत के बाट होंगे ॥
चलन स्वदेशी बसन स्वदेशी, परन स्वदेशी न होवे जिनका ।
समझलो धोबीका उनको कुत्ता न घर पर होंगे न घाट होंगे ॥
स्वदेशी सनअत, स्वदेशी जुरअत, स्वदेशी ताक़त स्वदेशी ल्याक़त।
दिखा के जग को करेंगे डगमग, हैरान लंदन के लाट होंगे ॥
स्वदेशी हरघर नगर शहर पर, असर करे जब भर पूर अपना ।
तब लंकाशायर वो मानचेस्टर, में सड़ते कपड़ेके गाँठ होंगे ॥
स्वदेशी युवकों के खूं का गारा, स्वदेशी शासन बनाता पुख्ता ।
क्या ? ग़म छुटेगा फ़वारा खूं का, बदन भर लाठीके साट होंगे ॥
(चकोर) चेतो, चतुर ऐ हिन्दी, बचाओ दामन बिदेशीसे तुम ।
तुम्हारी आहें जलाती पत्थर, जलेंगे क्यों नाज़ो काठ होंगे ॥
गुलामी बेशक कफ़न पहन कर, क़बर के अन्दर सबर करेगी ।
न खाट में रह सकेंगे खटमल, ज्यों गर्म-जल ए बायकाट होंगे ॥

---*---

भारत के लाल दोनों

बे खुद फ़ना पै आशिक़, भारत के लाल दोनों।
हैं धर्म के बहाने, होते हलाल दोनों॥
गो एक ही है ईश्वर, सारे जहां का पालक।
दीनो धरम का मालिक नाशक-दयाल दोनों॥
मस्ज़िद में वह खुदा है, मन्दिर का राम वह है।
मक्का वो काशी उस के, घर हैं विशाल दोनों॥
मन्दिर में ग़र अज़ाँ हो, मस्ज़िद में आरती हो।
उस को नहीं करेंगी, सूरत मलाल दोनों॥
यह मज़हबी लड़ाई, अय्यामे-अबतरी में।
हाथों पै देखना है, आंखे निकाल दोनों॥
मुल्ला वो पंडितों की, जब तक बनी रहेगी।
तब तक रहेंगे फुटते, लड़ कर कपाल दोनों॥
अन्धी-यक़ीनी अपनी, रक्खो क़बर चिता में।
सुन लो ऐ हिन्दू-मुस्लिम, के नौनिहाल दोनों॥
क्यों धर्म वो खुदा को, बदनाम कर रहे हो।
करो ऐ (चकोर) मिल कर, भारत निहाल दोनों॥

"चकोर"

आमला माधुरी तैल ।

मनहर-सुखद सुगन्ध युत, शीतलता की खान ।
मुद-मय माधुरी आंवला, तैल न मध्य महान ॥
असमय सफेद बाल को काला बनाने में ।
नाज़ुक दिमाग को सदा आला बनाने में ॥
रखता कमाल वह कि ऐ शैदा हज़ार है ।
इसकी महक से हो रहे गुलशन बाज़ार है ॥

मैं क्या तारीफ करूं लगाने वाले एक बार इस्तेमाल कर के इस तैल का गुण इसी से मालूम कर सकते हैं ।

मूल्य ॥) —फी शीशी ६ औंस

हर जगह एजन्टों की जरूरत है ।

पता—श्रीराम गुप्ता

पो॰ बृजमनगंज [गोरखपुर]

ॐ

लीजिये ! लीजिये ! !

Regd. Trade Mark

No. 577/29

दूध बढ़ाने की बूटी ।

अनेक माताओं को प्रसव के पश्चात ही दूध न उतरने से दुध मुहे बच्चों का माता का दूध न मिलने से महान कष्ट होता जिसे बच्चे ही जानते इसी अभाव को दूर करने के लिये कई प्रकार की प्रभावशाली शक्तियों को मिश्रित करके यह दूध बढ़ाने की बूटी तैयार की गई है। जिन माताओं को दूध न उतरता हो इससे लाभ उठाना चाहिये। गाय भैंस को भी दूध कम होने पर यह दवा सेवन कराइये यथेष्ट लाभ होगा। मूल्य फी डब्बा-१) डा० व्य० ।≤)।

पता—**अमृतसुधा कार्य्यालय**

पो० बृजमनगंज [गोरखपुर]